



भासकृत 'अविमारक' में काम-भावना

शोध पत्र-संस्कृत

* सचीन्द्र कुमार

काव्यों में नाटक अत्यधिक रमणीय होता है।¹ रमणीयता के सम्बन्ध में माघ का कथन है कि जो वस्तु नवीनता को निरन्तर बनाये रखे, वही रमणीय है।² इससे सिद्ध होता है कि रमणीय कहलाने वाला नाटक काव्य की ऐसी विधा है जो सामाजिकों में निरन्तर नवीनता को प्रस्तुत करता है। नाटक अवस्थाओं का अनुकरण³ करने के कारण मानव पर अमित छाप छोड़ता है। संस्कृत साहित्य के प्रमुख नाटककार के रूप में महाकवि भास हैं। ये कालिदास एवं भवभूति सरीखे नाटककारों के पूर्ववर्ती हैं। इनके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वे हास्य रस प्रधान नाटक के रचयिता हैं,⁴ किन्तु इनकी नाट्यकृति 'अविमारक' को देखने से प्रतीत होता है कि शृंगार रस प्रधान रचना में भी ये अद्वितीय हैं। इनकी यह कृति नाटकीय विधा के अन्तर्गत प्रकरण है, जिसका आधार बृहत्कथा की लोककथाएँ हैं। प्रेम के दो पक्ष होते हैं – संयोग और वियोग। जब दोनों पक्षों से होकर प्रेम गुजरता है तब वह परिष्कृत हो जाता है। वासनामूलक प्रेम कभी चिर-स्थायी नहीं हो सकता। जब नायक और नायिका परस्पर रूप-लावण्य एवं अवस्था को देखकर प्रेम के लिए उत्कण्ठित होते हैं तो वह स्थिति कामुकता है।

प्रेम का स्थान हृदय होता है और सच्चे प्रेम में वासना का कोई स्थान नहीं है। काम-भावना तो मानव ही नहीं अपितु संसार के सभी प्राणियों में होती है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फेराडे ने इसे जन्मजात प्रवृत्ति माना है।⁵ सम्य समाज में विवाह एक संस्कार माना जाता है। विवाहोपरान्त व्यक्ति गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता है तथा नई सन्तति हेतु इसकी पूर्ति करता है। कवि या नाटककार के लिए भी नायक-नायिका के बीच वासनारहित पवित्र प्रेम अभीष्ट होता है, जबकि भासकृत 'अविमारक' में नायक अविमारक नायिका कुरंगी को पागल हाथी से बचाता है। अविमारक के सौन्दर्य एवं पराक्रम से कुरंगी तथा कुरंगी के रूप-यौवन पर अविमारक लुब्ध हो जाता है। कुरंगी के प्रति वह इतना आसक्त हो जाता है कि उसकी मनः स्थिति बिगड़ जाती है। कुरंगी की भी वही स्थिति हो जाती है। कुरंगी की सखी धात्री और नलिनिका उसकी अवस्था को देखते हुए अविमारक से गुप्त-मिलन की योजना बनाती है। धात्री इस कार्य को कठिन मानती है। वह कहती है – ऐसा करती हूँ तो राजकुल कलंकित होता है और यदि नहीं करती हूँ तो निश्चय ही वह मार जायेगी।⁶ जब धात्री और नलिनिका अविमारक के पास गुप्त-मिलन का प्रस्ताव देने पहुँचती है तो अविमारक कुरंगी के बारे में इस प्रकार कहता रहता है – अहा, कैसा विलक्षण था उसका रूप। छाती स्तन के भार से अलस है, शरीर जंघन के भार से खिन्न है। मुख आँख की सुन्दरता से पूर्ण है, अधर स्वाभाविक लालिमा से भरा है। रतिकाल में विलासों से पूर्ण उसका चेहरा कितना सुन्दर होगा?⁷

अविमारक के उद्गार से स्पष्ट होता है कि वह कामातुर है। वह रति को उद्दीप्त करने वाले नायिका के अंगों का स्मरण करता है। धात्री और नलिनिका अविमारक से पूछती है कि आप क्या सोच रहे हैं? अविमारक कहता है कि मैं योगशास्त्र की चिन्ता कर रहा हूँ। तब वे दोनों कहती हैं – वह योग एकान्त राजकुल में सम्पन्न होगा। वहाँ भी कोई उत्कट रूप से योग की चिन्ता कर रही है। फिर, अविमारक कहता है कि आपने मेरे प्राण मुझे फिर से दे दिये, क्योंकि उसके भयाकुल नयनों से सुन्दर, सौम्य, अतितीक्ष्ण मुख देखकर मैं पागल हो रहा था, सम्प्रति आपलोगों के वाक्यरूपी अमृत ने मुझे होश में ला दिया है।⁸ धात्री जब अविमारक से कहती है कि आज ही आपको कन्यापुर में प्रवेश करना चाहिए।

तब अविमारक प्रसन्न होकर कहता है कि कौन ऐसा रोगी होगा जो औषध के मिलने पर देर करेगा?⁹ आप आधी रात के समय मेरी प्रतीक्षा करें। अविमारक चोर के वेश में रस्सी और तलवार लेकर राजमहल पहुँचता है। कन्यापुर के पास पहुँचकर कहता है कि यदि चढ़ना कठिन है तथापि प्रियतमा के पास आकर प्राणदा पर चढ़ने में मुझे क्या शंका? नाल में वर्तमान कण्टक के भय से कौन आदमी नलनी का त्याग करता है।¹⁰ फिर वह प्रयत्न कर कन्यापुर के अन्दर राजकुमारी कुरंगी के समीप आकर कहता है – यही तो है वह, जिसमें मेरी आँखें तृप्त नहीं हो रही हैं, अंगों का आलिंगन-सा करती हैं, बुद्धि जल्दी कर रही है और सोती प्रिया को जगा रही है।¹¹ अविमारक को देखकर नलिनिका कहती है – यह कामदेव जलराशि की तरह दोनों तटों को पीड़ित कर रहे हैं।¹² राजकुमार, इस शयनतल को अलंकृत करें। जब नलिनिका अविमारक से कहती है कि राजकुमारी को जगा दूँ। तब अविमारक काम-भावना का प्रकटीकरण करता है – मेरे दो ही नेत्र हैं, मैं सहस्र नेत्र नहीं हूँ। चिर प्रतीक्षा के कारण हमारी वृद्धि मूढ़ हो रही है। काम-सागर के अन्त को प्राप्त करके हमारी आँखें आज यथेच्छ क्रीड़ा कर ले।¹³ फिर, कुरंगी नलिनिका से कहती है कि आधी रात का समय है, मैं थक गई हूँ, आओ मुझसे लिपट कर सो जाओ। जब नलिनिका की प्रेरणा से अविमारक लिपट कर सो जाता है। पैर दबाते हुए नलिनिका से कुरंगी पूछती है कि मेरा पैर कौन दबा रहा है? इस पर नलिनिका सबकुछ बता देती है। तब कुरंगी घबड़ाकर कहती है – हाय, मेरा चरित्र नष्ट हो गया।¹⁴ अविमारक उससे कहता है कि भय दूर करो, मुझपर कृपा करो, अधिक क्या कहूँ, मैं तेरी शरण में हूँ। उसके बाद भार्तृदारिका धात्री आकर कहती है कि भीतर बिछावन लगा हुआ है, राजकुमार और राजकुमारी वही जाकर सोयें। अविमारक कुरंगी का हाथ पकड़कर उठते हुए कहता है – आज मैंने यौवन का ऋण चुका दिया, क्योंकि इस मेरी प्रिया की आँखें आनन्दाश्रु से भरी हैं, हाथ द्वारा थामे गये स्तन सात्विक

*शोध छात्र : संस्कृत विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर।

भावोदय से काँप रहे हैं, श्रोणी अधिक भारवती एवं चरण स्वेद से गीले हो रहे हैं। यही हम दोनों की सप्तसदी रही,, योजना कार्यान्वित हो रही है। यदि आज की रात युगशत प्रमाण हो जाए तो मुझसा धन्य कौन होगा?¹⁵ फिर राजकुमार अविमारक सुखपूर्वक एक वर्ष तक कन्यापुर में छुपकर कुरंगी के साथ व्यतीत करता है। जैसा कि नलिनिका का कथन है— लोग ठीक कहते हैं कि सुख में बहुत विघ्न हुआ करते हैं। एक वर्ष हुआ राजकुमारी निरन्तर सुखोपभोग करती रही है। आज महाराज को इस बात की खबर मिल गई है, यह सुनकर हमारे अंग शिथिल हो रहे हैं। राजकुमारी तो लाज, काम तथा भय से पीड़ित होकर सन्ताप से व्यथित हो बेहोश हो रही है।¹⁶ कन्यापुर से बाहर आने के बाद कामातुर अविमारक कहता है कि आज मानस तथा शरीर क्लेश असह्य हो रहा है। अकपट परिचय में प्रेम बढ़ाने वाली सुरूपा, नवयौवना तथा प्रियतमा कुरंगी से दूर रहकर मैं यदि क्षणभर भी जीवित हूँ तो इससे बड़ी और कौन—सी कृतघ्नता हो सकती है।¹⁷ इस समय काम से जलते हुए मेरे शरीर पर भगवान् सूर्य क्षार का कार्य कर रहे हैं। इस जीकर भी मृतक की तरह रहने से क्या लाभ? मैं जान दे दूँगा। ऐसा निश्चय कर वह आग में प्रवेश करता है तथा आग द्वारा उसे नहीं जलाये जाने पर कहता है— मेरे लिए आग की ज्वाला चन्दन के लेप की तरह शीतल हो रही है, यह अग्निदेव मुझ कामातुर के प्रति दया दिखला रहे हैं।¹⁸

पुनः वह पर्वत शिवर पर चढ़ता है तथा कूद कर प्राणत्याग करने का प्रयत्न करता है। उसी समय विद्याधर पहुँचकर उसे बचाते हैं और उसे एक दिव्य अंगूठी प्रदान करते हैं। उसी अंगूठी के प्रभाव से वह अदृश्य होकर कन्यापुर पहुँचता है और चादर से फाँसी लगाकर प्राणत्याग करने का प्रयत्न करती हुई कुरंगी को बचाता है। जब अविमारक उसका आलिंगन करता है तो वह कहती है— आश्चर्य, एक ही क्षण में मेरे देह का दाह दूर हो गया।¹⁹ मेघ को देखकर कुरंगी

कहती है कि आर्यपुत्र, अब यह मेघ देखने योग्य लग रहे हैं। इसपर अविमारक कहता है— अहा कभी कम कभी अधिक पड़ती हुई यह वर्षा कितना भली लगती है, आकाशरूप सागर की तरंगों के समान यह मेघ गरज रहे हैं, मेघ के प्ररोह के समान यह जलधाराएँ गर रही हैं, राक्षस की स्त्रियों की भृकुटि के समान बिजली चमक रही है, प्रौढ़ यौवन के स्तन—मर्दन का काल आ गया है।²⁰ फिर अविमारक और कुरंगी अन्तःपुर में प्रवेश कर जाते हैं।

नाटक के छठे अंक में जब नारद कुरंगी के पिता कुन्तिभोज से कहते हैं कि आपकी कन्या से अविमारक आपके महल में ही गान्धर्व विवाह कर रहा है तो कुन्तिभोज कहते हैं— मैं लज्जित हूँ, किसने दिया, कैसे दिया, कैसे वह कन्यापुर प्रवेश कर सका?²¹ तब नारद इसे विधि का विधान बताते हैं। वह कहते हैं कि पहली बार उसने पराक्रम से तथा इस बार मायाबल से प्रवेश किया है। अतः आप अग्नि को साक्षी मानकर पुरोहित द्वारा रीति—व्यवहार कराकर बान्धवों के समक्ष विवाह सम्पन्न करायें, क्योंकि गान्धर्व विवाह तो पहले ही हो चुका है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रकृत नाटक के नायक—नायिका प्रथम दर्शन के समय ही वासनारहित प्रेम के डोर से न बँधकर कामदेव के वाणों से बंध जाते हैं। दोनों इतने कामातुर हो जाते हैं कि उनकी मनःस्थिति बिगड़ जाती है। नायक पराक्रम द्वारा नायिका को जीवन—संगिनी बनाने का प्रयास न कर चोर की भाँति आधी रात में जाता है तथा सोयी हुई नायिका से लिपटकर आलिंगन करता है। कामाग्नि शान्त करने के लिए एक वर्ष तक छुपकर रहता है। राजा को जब पता चलता है तो भागकर निकल जाता है, किन्तु कामासक्ति के कारण वियोग को सहन न करते हुए दोनों आत्महत्या के लिए उद्यत हो जाते हैं। अतः मदनज्वर से ग्रसित होने के कारण नायक—नायिका काम—भावना को पर्याप्त महत्त्व देते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- ग्रन्थ — महाकविभासप्रणीतम् अविमारकम् (प्रकाश संस्कृत—हिन्दी व्याख्या) व्याख्याकार—आचार्य रामचन्द्र मिश्र, प्रकाशक—चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी—1 प्रथम संस्करण 1995
1. काव्येषु नाटकं रम्यम् । 2. क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति, तदेव रूपं रमणीयतायाः । (माघकृत शिशुपालवध, 4-17) 3. अवस्थानुकृतिर्नाट्यम् । (भरतमुनि, नाट्यशास्त्र) 4. भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः । (जयदेव, प्रसन्नराघव) 5. शिक्षा मनोविज्ञान । (लेखक—डा० पी० डी० पाठक) 6. अहो सङ्कडदा कय्यस्स । जइ एवं करीअदि, राअउलं दूसिअं होइ । जदि क करीअदि, अवस्सं सा विवज्जइ । (अविमारक के द्वितीय अंक में धात्री का कथन) 7. अहो तस्या रूपसम्पत् । उरः स्तनतटा—लसं जघनभाराखिन्ना तनुः । मुखं नयनवल्लमं प्रकृतिताम्रबिम्बाधरम् । (वही,, अविमारक का कथन) 8. तस्या भयाकुलितदृष्टिविषं मनोज्ञं / सौम्यप्रकारमतितीक्ष्णमवेक्ष्य वक्रत्रम् / उन्मादभभ्युपगतोऽस्मि चिरं भवत्यो / वक्त्रयुतेन पुनरद्य कृतः ससंज्ञः । (वही,, 2-7) 9. कस्तावदौषधमुपलभ्य मन्दीभवत्यातुरः । / (वही,, अविमारक का कथन) 10. कामासमीपमुपगम्य मनोभिलाषा / द्धर्म्याधिरोहणमतेर्मम का विशङ्का । / संसक्तनालगतकण्टकभीतचेता / स्तुष्णार्दितः क इह पुष्करिणीं जहाति ।। (वही,, 3-15) 11. दृष्टिर्न तृप्यति परिष्वजतीव साङ्गं / बुद्धिस्त्वरं व्रजति बोधयतीव सुनाम् । / रागोऽभिचोदयति सादयतीव चाङ्गं / हर्षात् प्रसीदति विमुहयति चान्तरात्मा ।। (वही,, 3-17) 12. एसो खु भअवं कामेवो ओधो विअ उभयपक्खं पीडेइ । (तृतीय अंक में नलिनिका का कथन) 13. अहं द्विनेत्रो न सहस्रनेत्रो / मतिश्च मूढा सुचिराभिलाषात् । / कामार्णवस्याद्य तु दृष्टिपारं / चेक्रीड्यतां मे सुखमक्षियुग्मम् ।। (वही,, 3-18) 14. हा हीणं चारिणं । (वही, कुरंगी का कथन) 15. नेत्रे वाष्पपरिलुप्ते करधृतौ व्यावलमानौ स्तनौ श्रोणी चाधिकमारिका न विशदौ पादौ छिया स्यन्दिनौ । / एतत् सप्तपदप्रमाणमिह भोः । / सम्पाद्यते योजना यदेषा क्षणदा भवेद् युगशतं धन्यो मदन्यः कुतः । (वही,, 3-20) 16. सच्चो खु लोअप्पवादो—बहुविग्धाणि सुहाणि ति । एसो खु संवच्छरो अदिवकन्दो भट्टिटदारिआए अविच्छिण्णसुहसम्मोएण रदिं करिअ । अम्हाअं पुण गोद्वीजणस्स उत्तरकुक्कुवासो संवुत्तो । अज्ज उअ महाराएण विदिदो एसो खु वृत्तान्तो ति सुणिअ सीददि विअ सरीरं । भट्टिटदारिआ च लज्जाभयणअणेहि अभितालिअमाणा सन्दावेण मुद्धा अवअदवेदणा विअ संवुत्ता । (वतुथं अंक में नलिनिका का कथन) 17. निर्व्याजं परिचयवर्धमानरागं / रूपादयामभिनवयौवनां मनोज्ञाम् । / त्यक्तवा तां क्षणमपि वञ्चितोऽस्मि जीवन् / कष्टोऽन्यः क इह भवत् कृतघ्नभावः ।। (वही,, 4-3) 18. दग्धाः स्फुलिङ्गानिकरैर्मिपन्ति वृक्षा / ज्वालाश्च मे मलयचन्दनपङ्ककशीताः । / अग्निर्दयां हि कुरुते मदनतुरेऽति / पुत्रं पितेव च परिष्वजति प्रच्छत् ।। (वही,, 4-8) 19. अच्छरीअं एकखणोण णस्सदि विअ मे सरीरदाहो । (पंचम अंक में कुरंगी का कथन) 20. व्योमार्णवोमिसदृशा निनदन्ति मेधा / मेघप्ररोहसदृशाः प्रपतन्ति धाराः । / रक्षोङ्गनामुक्त्वित् तडितः स्फुरन्ति / प्राप्तोऽग्रयौवनघनस्तनमर्दकालः ।। (वही, 5-7) 21. लज्जित इवासिम् । केन दत्ता, कथं वा, कथं चायं प्रविष्टः कन्यापुरम् । (छठे अंक में कुन्तिभोज का कथन)